बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है)

मुक्ति-मार्ग

देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक चले जाइए, हर जगह ापको धार्मिक यादगारें, पूजा के स्थान और इबादतगाहें नज़र आएँगी। मारे अपने देश में ही नहीं, दुनिया में हर जगह, जहाँ भी देखिए इनसान : पुराने से पुराने इतिहास और पुरानी से पुरानी जातियों की यादगारें ें बताती हैं कि इनसान का दिल व दिमाग़ ईश्वर की धारणा से कभी ाली नहीं रहा। इनसान ने हर ज़माने में ईश्वर को किसी न किसी प में माना है और किसी न किसी रूप में उसकी उपासना अवश्य ी है। अब भी संसार में जितनी जातियाँ हैं, चाहे वे निरी जंगली हों बहुत ही सभ्य, वे सब किसी न किसी को ईश्वर मानती हैं और नकी उपासना भी करती हैं। ईश्वर कैसा है? ईश्वर एक है या अनेक? नके गुण क्या हैं? इनसान की हैसियत क्या है? उसका अन्त क्या गा? ईश्वर से इनसान का क्या सम्बन्ध होना चाहिए? ये और इसी ह के सवालों के जवाब का नाम और यह जवाब जो इनसान से हता है, उसका नाम धर्म है। और यह कहना एकदम सत्य मालूम ता है कि धर्म इनसान के स्वभाव में रचा-बसा है और यह उस समय मौजूद है जब से इनसान पैदा हुआ और उस समय तक रहेगा जब र इनसान इस संसार में बाक़ी है।

यह बात कि आख़िर किस चीज़ ने इनसान को मजबूर किया कि ईश्वर को अवश्य ही माने और किसी न किसी तरह अपना सिर के सामने झुकाए, थोड़ा-सा विचार करने से समझ में आ जाती है।

इनसान की मजबूरी

इनसान वास्तव में दास ही पैदा हुआ है। बहुत बड़ी ताक़त और अधिकारों का मालिक होते हुए भी वह अपने स्वभाव से ही मजबूर और कमज़ोर है, बहुत-सी चीज़ें हैं जो उसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए ज़रूरी है, लेकिन वे उसके अधिकार से बाहर हैं। बहुत-सी चीज़ें हैं जो उसके लिए लाभदायक हैं, वह उनको प्राप्त करना चाहता है, जो उसको कभी तो प्राप्त हो जाती हैं और कभी नहीं। बहुत-सी चीज़ें ऐसी हैं जिनकी विशालता देखकर वह भयभीत हो जाता है। पहाड़ों को देखता है, हवाओं के तूफ़ान, पानी की बाढ़ें और धरती के भूकम्प देखता है। सूरज, चाँद और नक्षत्र उसको चक्कर लगाते दिखाई देते हैं। वह देखता है कि यह सब चीज़ें कितनी ताक़तवर और कितनी बड़ी हैं और वह उनके सामने कितना कमज़ोर और छोटा है।

इन दृश्यों और ख़ुद अपनी मजबूरी को देखकर उसके मन में आप से आप अपनी ग़ुलामी और मजबूरी का एहसास जागता है और इस एहसास के साथ ही ईश्वर की कल्पना भी पैदा हो जाती है। होना तो यह चाहिए कि वह उस ईश्वर के सामने अपने आपको झुका देता, किन्तु अज्ञानता के कारण वह ईश्वर की पैदा की हुई चीज़ों को ही पूजने लगता है।

अज्ञान के चमत्कार

इनसान को जो चीज़ें बड़ी और ताक़तवर दिखाई देती हैं या किसी तरह का लाभ या हानि पहुँचाती हुई दिखाई देती हैं, वह अज्ञान के कारण उनकी पूजा करने लगता है। इसलिए वह सूरज, चाँद और धरती को पूजता है। नदियों, पहाड़ों, पेड़ों और पशुओं की पूजा करने लगता है।

जब इनसान सोच-विचार से काम लेता है तो उसे पता चलता है कि ये सब चीज़ें तो ख़ुद उसी की तरह कमज़ोर और मजबूर हैं। बड़े

से बड़ा जानवर भी एक मच्छर की तरह मरता है। बड़ी से बड़ी नदियाँ भी चढ़ती-उतरती और सूख जाती हैं। पहाड़ों को ख़ुद इनसान ही तोड़ता-फोड़ता है। ज़मीन का फलना-फूलना और हरा-भरा होना ख़ुद ज़मीन के बस में नहीं है। जब पानी उसका साथ नहीं देता तो वह सूख जाती है। चाँद, सूरज और सितारे भी एक क़ानून से बँधे हुए हैं, जिसके ख़िलाफ़ वे कभी हिल नहीं सकते। अतः इनको पूजना मूर्खता है। लेकिन उसका दिमाग़ इस बात की ओर जाता है कि बहुत-सी अप्रत्यक्ष एवं रहस्यमय शक्तियाँ और कुछ छिपी हुई ताक़तें हैं, जो जगत और ख़ुद इनसान पर शासन कर रही हैं और सब कुछ उन्हीं के हाथ में है। यहीं से बहुत-से देवी-देवताओं की कल्पनाएँ जन्म लेती हैं। रौशनी, हवा, पानी, बीमारी, तन्दुरुस्ती और विभिन्न वस्तुओं के ईश्वर अलग-अलग मान लिए जाते हैं और उनकी कल्पित मूर्तियाँ घड़कर उनकी पूजा की जाती है।

ईश्वर के प्रमाण

इनसान जब सोच-विचार से काम लेता है तो देखता है कि दुनिया के प्रबन्ध में एक ताक़तवर क़ानून का पालन हो रहा है। हवा की रफ़्तार, बारिश आना, सितारों का चक्कर लगाना और मौसमों की तबदीली में किस तरह नियमों का कड़ाई के साथ पालन होता है। किस तरह अनगिनत ताक़तें एक-दूसरे के साथ मिलकर काम कर रही हैं। कैसा प्रभावशाली क़ानून है कि जो समय जिस काम के लिए निश्चित है, ठीक उसी समय प्रकृति के सभी साधन जमा हो जाते हैं और आपस में सहयोग करते हैं। प्रबन्ध में यह सहयोग और तालमेल देखकर इनसान की समझ में आता है कि एक सबसे बड़ा ईश्वर भी है, जो सब पर शासन कर रहा है। अगर बहुत-से ईश्वर अपनी-अपनी इच्छाओं के अनुसार काम कर रहे हों तो प्रकृति का सारा प्रबन्ध ही बिखरकर रह जाए। इनसान इस बड़े ईश्वर को अल्लाह या परमेश्वर कहता है।

परन्तु वह इस ईश्वर को भी राजाओं और बादशाहों के समान समझकर

यह कल्पना कर लेता है कि इस बड़े ईश्वर के नीचे बहुत-से छोटे-छोटे ईश्वर कार्यकर्त्ताओं की तरह काम कर रहे हैं, इसलिए कल्पित छोटे-छोटे ईश्वरों को ख़ुश करने के लिए भेंटों और चढ़ावों के नाम से कुछ न कुछ अर्पित करने लगता है, परन्तु जो लोग ऊँचे स्तर से सोचते हैं, इन छोटे-छोटे कल्पित ईश्वरों के चक्कर से निकल जाते हैं, और वे ईश्वर को अकेला मान लेते हैं, जिसका कोई साझी नहीं। परन्तु इस एक ईश्वर के बारे में फिर भी उसके विचारों में बहुत कुछ अज्ञानता बाक़ी रह जाती है। कोई कल्पना करता है कि ईश्वर हमारी तरह का शरीर रखता है और एक जगह बैठा हुआ शासन चला रहा है। कोई समझता है कि ईश्वर ख़ुद इनसान के रूप में धरती पर उतरता है। कोई सोचता है कि इनसान की तरह उसको भी औलाद की ज़रूरत है। कोई कहता है कि ईश्वर इस संसार के कारख़ाने को मशीन की तरह चलाकर कहीं बैठ गया है। किसी का विचार है कि ईश्वर के यहाँ महापुरुषों और महात्माओं की सिफ़ारिश के बिना काम नहीं चलता। कोई अपनी कल्पना द्वारा ईश्वर का एक आकार बनाता है और पूजा करने के लिए उसी आकार को सामने रखना ज़रूरी समझता है। इस प्रकार एकेश्वरवाद पर विश्वास होते हुए भी बहुत-से भ्रम इनसान के दिमाग़ में रह जाते हैं।

यह सत्य नहीं कि सारे धर्म एक हैं

कभी इनसान समझ बैठता है कि हक़ीक़त में ईश्वर अकेला तथा बहुत ताक़तवर है, परन्तु उस तक पहुँचने के लिए अलग-अलग रास्ते हो सकते हैं। यह ईश्वर तक पहुँचने का विचार उसके दिमाग़ में ऐसा नक़्शा बनाता है, मानो ईश्वर किसी ऊँची चोटी पर है, उस तक पहुँचना किसी एक मार्ग पर निर्भर नहीं है। इनसान जिस तरफ़ और जिस रास्ते से चाहे अपना सफ़र शुरू कर दे, उस ऊँची चोटी तक पहुँच जाएगा।

परन्तु एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक सीधी लाइन एक ही हो सकती है, यदि इनसान ईश्वर को संसार का बनानेवाला मानता है तो यह भी मानना पड़ेगा कि ईश्वर शासक भी है और शासक के आज्ञापालन का

नियम और क़ानून एक ही हो सकता है।

धर्म केवल निजी मामला नहीं

कोई समझ बैठता है कि ईश्वर की भक्ति और पूजा इनसान की अपनी निजी बात है। एक इनसान को अपने ढंग से अपने ईष्टदेव की पूजा करके अपनी आत्मा को संतुष्ट करना चाहिए। समाज को इससे कोई लेना-देना नहीं। यद्यपि समाज को और इनसानी बिरादरी को शैतान के हवाले करके और अपने ही भाइयों को नरक और विनाश की ओर जाता हुआ छोड़कर बल्कि उन्हें तड़पते और बिलखते हुए देखकर भी केवल अपनी आत्मा की संतुष्टि की खोज करना क्या स्वार्थपरता या ख़ुदग़रज़ी नहीं है? और फिर यह स्वार्थ-सिद्धि सम्भव भी नहीं। एक इनसान एक समाज का अंग होते हुए पूरे समाज से हार्दिक और व्यावहारिक रूप से असम्बद्ध या अलग नहीं रह सकता और समाज की शान्ति के बिना किसी एक इनसान की शान्ति सम्भव नहीं। एक इनसान को शान्ति उसी समय मिल सकती है, जब उसका समाज शान्ति के मार्ग पर चल रहा हो। जब पूरे समाज में उथल-पुथल और बेचैनी हो तो किसी स्वार्थी इनसान के लिए यही एक उपाय रह जाता है कि वह समाज और ज़िम्मेदारियों से भागकर किसी जंगल में निकल जाए, लेकिन मौजूदा तरक़्क़ी के ज़माने में तो यह भी सम्भव नहीं।

ईश्वर और उसकी पूजा और बन्दगी को समाज और उसके मामलों से अलग कर देना और धर्म को इनसान का एक निजी मामला बना देने का स्वाभाविक और अनिवार्य फल यही होता है कि समाज का मक्खन, यानी नेकी और भलाई को पसन्द करनेवाले लोग बुराइयों से घबराकर अपनी आत्मा की शान्ति और मुक्ति की चिन्ता में समाज से अलग हो जाते हैं और बुराई के शैतान को खुली छूट मिल जाती है कि ईश्वर के बन्दों को कीचड़ में बिलकुल ही लथपथ कर दे।

धार्मिक और सांसारिक जीवन का अन्तर ग़लत है

इस ग़लत कल्पना यानी अपने विश्वास, अपने ईष्टदेव तथा अपने धर्म को समाज और उसके धारे से अलग कर देने का एक नतीजा इस रूप में भी निकलता है कि दीन और दुनिया, आध्यात्मिकता और भौतिकता, धार्मिक जीवन और भौतिक जीवन दो अलग-अलग भागों में बँट जाते हैं। एक ही इनसान जब पूजा-स्थल पर जाएगा तो बिलकुल नेक और ईश्वर-भक्त बनकर और जब वह संसार के कामों में भाग लेगा तो पक्का दुनियादार बनकर, फिर यही चीज़ आगे बढ़कर यह रूप धारण कर लेती है कि एक अच्छे ईश्वर-भक्त का दुनिया और उसके मामलों में रुचि लेना, चाहे वह रुचि बिगड़ी हुई दुनिया को सुधारने के लिए ही क्यों न हो, एक ख़राब काम है, जिसे कोई भी पसन्द नहीं करता है। और देखनेवाला यह सोचने लगता है कि यह कैसा धार्मिक व्यक्ति है जो दुनिया की चीज़ों से लगाव रखता है। सोचने की बात है कि वह नेकी किस काम की जो अपने भाइयों को सुधारने के काम न आए। और ऐसा महात्मा होना किस काम का जो अपने भाइयों को तड़पता हुआ देखे और उसका मन शान्त रहे। दूसरो की भलाई अगर अच्छी चीज़ है तो सच्ची आध्यात्मिकता यह होनी चाहिए कि इनसान अपने भाइयों के बुरे अंजाम को देखकर तड़प जाए। अगर बहुत-से भूखों को देखकर ख़ुद अपना पेट भर लेना स्वार्थ है तो अनेकों इनसानों को भौतिकवाद और शैतान के चक्कर में फँसा हुआ छोड़कर ख़ुद अपने संतोष की ही चिन्ता करना क्यों स्वार्थ नहीं है?

फिर इन बेचारों की समझ में इतनी मोटी बात भी नहीं आती कि एक मनुष्य में आत्मा भी होती है और शरीर भी, जिनको अलग-अलग नहीं किया जा सकता, तो समाज और उसके मामलों में यह दोनों अलग-अलग कैसे हो सकते हैं। एक इनसान की आत्मा का उसके शरीर से अलग हो जाना ही उसकी मौत है। इसी तरह सामाजिक जीवन में से आध्यात्मिकता, ईश्वर और धर्म को अलग कर लेने से उस समाज

की मौत क्यों न होगी?

बुनियादी सवाल

इनसान की प्रकृति की यह माँग और यह पुकार कि वह किसी उच्चतर सत्ता के आगे अपने शीश को झुकाना और उसकी भक्ति करना चाहता है, सदा से रही है और जब तक इनसान की प्रकृति को बिलकुल ही बिगाड़ न दिया जाए, बराबर रहेगी। परन्तु वह केवल अपनी बुद्धियों और ज्ञानेन्द्रियों के सहारे इन बातों को नहीं जान सकता कि ईश्वर क्या है और उसकी हक़ीक़त और सत्ता क्या है? तथा इनसान की शुरुआत कैसे हुई और उसका अंजाम क्या होगा? इनसान का ईश्वर से कैसा सम्बन्ध होना चाहिए? और इस सम्बन्ध की रौशनी में उसके जीवन का तरीक़ा इस संसार में क्या होना चाहिए? उसकी भलाई और कामयाबी क्या है, और उस तक पहुँचने का मार्ग कौन-सा है ? इसी प्रकार उसकी नाकामी का मतलब क्या है? उसके कारण क्या हैं और उससे कैसे बचा जा सकता है? ये वे प्रश्न हैं जो सदा से इनसान के सामने रहे हैं और जिनका जवाब वह सन्देह या इच्छा या बुद्धि या अनुभव की बुनियाद पर देता रहा है। और इन्हीं प्रश्नों के सही या ग़लत जवाब पर इस दुनिया में इनसानी व्यवहार का ग़लत या सही होना निर्भर है। और इन्हीं मौलिक चीज़ों के सही या ग़लत होने के आधार पर इनसान ख़ुद अपने लिए और दुनिया के लिए मुफ़ीद या ख़तरनाक बन सकता है।

पैग़म्बरों की बुनियादी शिक्षा

इन मौलिक सिद्धांतो के बारे में इस्लाम, यानी दुनिया भर के पैग़म्बरों का दीन, के सामने जो धारणा और जो रास्ता पेश करता है, वह संक्षेप में यह है—

ईश्वर ने, जो सारी सृष्टि का बनानेवाला और स्वामी और शासक है, अपने लम्बे-चौड़े राज्य के इस हिस्से में जिसे ज़मीन कहते हैं, इनसान

को पैदा किया, उसे जानने और सोचने समझने की शक्ति दी। भलाई और बुराई में से किसी एक को चुन लेने की आज़ादी प्रदान की। चीज़ों को काम में लाने का अधिकार दिया और एक तरह की आज़ादी (Autonomy) दी। इनसान को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा यानी नायब (Viceregent) बनाया। इस पद पर इनसान को बैठाते समय संसार के मालिक ने अच्छी तरह खोलकर यह बात उसे बता दी थी कि तुम्हारा और पूरे संसार का स्वामी, पूज्य और शासक मैं हूँ। मेरे इस राज्य में तुम आज़ाद नहीं हो, तुम्हें मेरी और सिर्फ़ मेरी पूजा और बन्दगी करनी है संसार का यह जीवन जिसमें तुम्हें अधिकार देकर भेजा जा रहा है, वास्तव में तुम्हारे लिए एक इम्तिहान की मुद्दत है, जिसके बाद तुम्हें मेरे पास लौटना होगा और मैं तुम्हारे काम की जाँच करके फ़ैसला करूँगा कि तुममें से कौन सफल रहा और कौन असफल। तुम्हारे लिए करने का यही काम है कि मुझे अपना एक मात्र पूज्य और शासक मानो। जो आदेश मैं भेजूँ, संसार में उसके अनुसार काम करो और संसार को इम्तिहान की जगह समझते हुए इस इरादे के साथ जीवन गुज़ारो कि तुम्हारा असली मक़सद मेरे आख़िरी फ़ैसले में सफल होना है। इसके अलावा तुम्हारे लिए हर वह व्यवहार ग़लत है जो इसके विरुद्ध हो। अगर मेरे बताए हुए मार्ग पर चलोगे तो तुम्हें इस जीवन में शान्ति और सन्तोष प्राप्त होगा और जब मेरे पास पलटकर आओगे तो मैं तुम्हें सदा-सदा का आराम और ख़ुशी का वह घर दूँगा जिसका नाम स्वर्ग (जन्नत) है। और अगर किसी दूसरी राह पर चलोगे जिसपर चलने की भी तुम्हें आज़ादी है तो दुनिया में तुमको फ़साद और अशान्ति का मज़ा चखना पड़ेगा और दुनिया से गुज़रकर जब परलोक में आओगे तो सदा का दुख सहने के लिए उस गड्ढे में फेंक दिए जाओगे, जिसका नाम नरक (दोज़ख़) है। यह अच्छी तरह बताकर सृष्टि के मालिक ने मनुष्य-जाति को ज़मीन में जगह दी और पहले इनसान यानी आदम को वह मार्गदर्शन भी दिया, जिसके अनुसार उनको और उनकी औलाद को ज़मीन में काम करना था। यह पहले इनसान अर्थात मानव-जाति के पिता अज्ञान के अँधेरे

में पैदा नहीं हुए थे, बल्कि ईश्वर ने ज़मीन पर उनके जीवन का आरम्भ—ज्ञान और मार्गदर्शन की रौशनी में किया था। हमारे मानव-जाति के पिता को उनकी हैसियत बताकर उनको जीवन बिताने का तरीक़ा भी बता दिया गया था। जीवन बिताने की राह ईश्वर का आज्ञापालन था और वह अपनी सन्तान को यह बात सिखा गए थे कि वह ईश्वर के आज्ञाकारी बनकर रहें। लेकिन बाद में धीरे-धीरे इनसान इस सही जीवन-पद्धति से मुँह मोड़कर अलग-अलग ग़लत रास्तों पर चल पड़ा। उन्होंने लापरवाही से ईश्वर के उस मार्गदर्शन को गँवा भी दिया और शरारत से उसे बिगाड़ भी डाला। उन्होंने ईश्वर के साथ विभिन्न विभूतियों की कल्पना की और उनको प्रभु की प्रभुता में साझी ठहरा लिया।

उन्होंने ईश्वर के दिए हुए वास्तविक ज्ञान में विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों एवं दर्शनों को मिलाकर कई मत बनाए। उन्होंने ईश्वर के दिए हुए सही आचार-विचार के नियम (शरीअत) को छोड़कर अपनी मनोकामनाओं एवं पक्षपात के अनुसार ऐसे नियम बना लिए जिनके कारण ईश्वर की यह ज़मीन ज़ुल्म और फ़साद से भर गई।

ईश्वर के मार्गदर्शन का प्रबन्ध

ईश्वर ने जो सीमित आज़ादी इनसान को दी थी उसके साथ यह बात मेल न खाती थी कि वह अपनी अपार शक्ति से काम लेकर इन बिगड़े हुए इनसानों को ज़ोर-ज़बरदस्ती के साथ सही राह की ओर मोड़ देता, या व्यावहारिक परीक्षा की इस मुद्दत को ख़त्म करके उन्हें नष्ट कर देता। जो काम मनुष्य के जन्म के प्रारम्भ से ईश्वर ने अपने ज़िम्मे लिया था वह यह था कि इनसान की आज़ादी को बाक़ी रखते हुए वह उसके मार्गदर्शन का प्रबन्ध करता रहेगा। उसने यही किया, इनसान की ज़रूरत को पूरा करने के लिए ईश्वर ने इनसानों ही में से ऐसे इनसानों से काम लेना शुरू किया, जो ईश्वर का पूरा-पूरा विश्वास (ईमान) रखनेवाले और उसकी इच्छा का आज्ञापालन करनेवाले थे। उसने उनको अपना प्रतिनिधि बनाया। अपने सन्देश उनके पास भेजे, उनको सत्य-ज्ञान प्रदान

किया, उन्हें जीवन बिताने का सही क़ानून बताया और उन्हें इस काम पर लगाया कि आदम की सन्तान को उस सीधे रास्ते की ओर लौटाने का प्रयत्न करें जिससे वे हट गए थे।

सभी पैग़म्बर एक ही दीन लाए

ये ईश्वर के पैग़म्बर अलग-अलग क़ौमों और देशों में आते रहे। हज़ारों वर्ष तक उनके आने का सिलसिला चलता रहा। इन सबका एक ही दीन था, यानी वह सही तरीक़ा जो पहले दिन ही इनसान को बता दिया गया था। वह सब एक ही मार्गदर्शन पर चलनेवाले थे और उन सबका एक ही उद्देश्य था, यानी यह कि उस तरीक़े और उस मार्गदर्शन की तरफ़ लोगों को बुलाएँ। फिर जो लोग इस बुलाने को मान लें तो उनको संगठित करके एक ऐसी पार्टी यानी उम्मत बनाएँ जो ख़ुद ईश्वर के क़ानून की पाबन्दी करे और संसार में ईश्वर के क़ानून को लागू करने और इस क़ानून का उल्लंघन रोकने के लिए संघर्ष करे। ईश्वर के इन पैग़म्बरों ने अपने-अपने समय में इस मिशन को बहुत अच्छे ढंग से पूरा किया, मगर सदा यही होता रहा है कि इनसानों की एक बड़ी तादाद तो उनके संदेश को मानने पर तैयार ही नहीं हुई और जो इसको मानकर ईश्वर के आज्ञाकारी बने भी, वे धीरे-धीरे ख़ुद बिगड़ते चले गए, यहाँ तक कि उनमें कुछ समुदायों ने ईश्वर के मार्गदर्शन को बिलकुल ही खो दिया और कुछ ने ईश्वर के संदेशों को अपनी मनमानी मिलावटों से संदिग्ध और विकृत कर दिया। इतना ही नहीं हुआ बल्कि यह भी हुआ कि ईश्वर के भेजे हुए वे पैग़म्बर, जिनका काम ही यह था कि ईश्वर के बन्दों का सिर सभी स्थानों से हटाकर केवल ईश्वर के आगे ही झुकवाएँ, उनके माननेवालों ने ख़ुद उन्हीं को ईश्वर बना लिया, यानी कुछ लोगों ने चाहे उनको ईश्वर के नाम से न पुकारा हो परन्तु उन्हें अपना दाता और कष्ट-निवारक मानकर उनसे ठीक वैसा ही सम्बन्ध जोड़ लिया, जैसा सम्बन्ध बन्दों का ईश्वर से होना चाहिए। खुली बात है कि हमारा इतना बड़ा देश भारत ईश्वर के इस बड़े वरदा

शानी ईश्वर के मार्गदर्शन से कैसे वंचित रह सकता था। निश्चय ही ईश्वर के भेजे हुए रसूल हमारे यहाँ भी आए होंगे, जिनके चरणों के प्रताप से ही हमारा यह देश धर्म-चरित्र और आध्यात्मिकता का क्षेत्र रहा, जो बेशक एक गर्व की बात है। मगर इस बात पर भी विश्वास करना पड़ता है कि ईश्वर के मार्गदर्शन के साथ जो बरताव सारी दुनिया में हुआ, वही बरताव यहाँ भी हुआ होगा। दुनिया की दूसरी क़ौमों ने ईश्वरदूतों के लाए हुए मार्गदर्शन को या तो मनमाने ढंग से बिगाड़ डाला या उसे भुला दिया और गुम कर दिया। वह सन्देश और मार्गदर्शन इन महापुरुषों के व्यावहारिक आदर्शों के साथ यदि सुरक्षित रहता तो रौशनी का चिराग़ होता। यहाँ भी लोगों ने ईश्वरीय आदेशों को अपनी इच्छाओं के अनुसार ढालकर उनको विनष्ट कर दिया, और महापुरुषों के साथ ऐसी-ऐसी गंदी बातें जोड़ दीं जिनसे हर सभ्य व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाए।

इन हालात में यह कहना सही होगा कि जिन महान विभूतियों की पूजा की जाती है, वे सब या उनमें से कई ईश्वर के पैग़म्बर रहे होंगे। इन महापुरुषों के साथ भी वही कुछ हुआ जो दुनिया में होता रहा है।

हज़ारों साल तक लगातार हर देश और हर क़ौम में ईश्वर के पैग़म्बर इनसानों तक ईश्वर का सन्देश पहुँचाने के लिए आते रहे। हुआ यह कि उनके जीवन में उनको न माननेवालों ने उनपर अत्याचार किया और उनके बाद माननेवालों ने उनके साथ और उनके लाए हुए मार्गदर्शन के साथ दुर्व्यवहार किया। इस तरह अत्याचार बराबर चलता रहा, यहाँ तक कि इनसान इस क़ाबिल हो गया कि ईश्वर के मार्गदर्शन को ख़ुद उसके उचित होने के आधार पर और उसे लानेवाले के व्यावहारिक जीवन को देखकर पहचान सके और उसमें इतनी क्षमता भी पैदा हो गई कि ईश्वर के मार्गदर्शन को सुरक्षित भी रख सके। साथ ही सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति ने सारी दुनिया को इकाई बना दिया तो ईश्वर ने हर-हर क़ौम और हर-हर देश में अलग-अलग रसूल और सन्देष्टा भेजने का सिलसिला बन्द करते हुए अरब देश में अपने अन्तिम रसूल

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उसी काम के लिए भेजा, जिसके लि पिछले रसूल (दूत) आते रहे थे। उन्होंने तमाम इनसानों और रसूलं के बिगड़े हुए लोगों को भी सच्चे रास्ते की तरफ़ बुलाया और न सिरे से ईश्वर का सन्देश पहुँचाया। जो लोग इस आह्वान और मार्गदर्श को मान लें, उन्हें एक ऐसी पार्टी बना देना भी उनका काम था, जे एक तरफ़ स्वयं अपनी जीवन-व्यवस्था ईश्वरीय मार्गदर्शन पर स्थापित करें और दूसरी तरफ़ संसार के सुधार के लिए भी कोशिश करते रहें। इसी बुलावे और मार्गदर्शन का नाम इस्लाम है। और इसी के अनुसार जीवन गुज़ारने और लोगों के जीवन को इसी के अनुसार ढालने की कोशिश करनेवाली पार्टी का नाम मुस्लिम समुदाय या उम्मते मुस्लिमा है।

ईश्वरीय सन्देश के प्रभाव

यह शिक्षा इनसान को सबसे ऊँचा स्थान देकर उसको ईश्वर का प्रतिनिधि और नायब क़रार देती है। वह इनसान से कहती है कि तेरे ऊँचे शीश के लिए यही एक बात शोभा देने के लायक़ है कि किसी भी दूसरे के सामने न झुककर केवल ईश्वर के सामने ही झुके। वह इनसान को बताती है कि यह नदी, यह पहाड़, यह चाँद और सूरज, यह ज़मीन और जानवर जिनमें से कुछ से डरकर तू उनके सामने माथा टेक देता है और कुछ को अपने लिए लाभदायक पाकर उनके पैरों पर गिर जाता है, ये सब तो वास्तव में तेरे सेवक हैं और उन्हें केवल तेरी सेवा के लिए पैदा किया गया है। स्वयं अपने ही सेवकों के सामने झुक जाना न केवल अपने प्रिय और महान ईश्वर की नाशुक्री है, बल्कि तेरे ऊँचे शीश का अपमान भी है। जो शक्तियाँ और ख़ूबियाँ, जो भावनाएँ और मनोकामनाएँ तुझको दी गई हैं, वे इसलिए कि तू उनकी सहायता से मानवता के ऊँचे पद पर पहुँचे। तेरे लिए उचित नहीं कि तू भौतिकवाद के जंगल में खो जाए। इस शिक्षा को मान लेने के बाद मनुष्य की सोई हुई शक्तियाँ और प्रवृत्तियाँ जाग पड़ती हैं। उसका सोया हुआ स्वाभिमान

ाग उठता है और उसका सिर ईश्वर के अलावा कहीं नहीं झुकता। सका हाथ ईश्वर के अलावा किसी के सामने नहीं फैलता, उसके ोच-विचार में व्यापकता और दिल में विशालता पैदा हो जाती है। ह अपने बड़े से बड़े कामों पर गर्व नहीं करता, क्योंकि वह जानता कि तारीफ़ के लायक़ तो केवल वह है जिसने इतनी शक्ति देकर नसान को पैदा किया है।

इस बात पर विश्वास रखनेवाला अच्छी तरह समझ सकता है कि न की पवित्रता और चरित्र-निर्माण के सिवा उसके लिए मुक्ति और ल्याण का कोई रास्ता नहीं है। यह विश्वास इनसान में सन्तोष और ःस्वार्थता की शान पैदा करता है। लोभ, मोह, ईर्ष्या व जलन की टिया भावनाएँ उसके दिल से निकाल देता है। यह विश्वास अपने ाननेवालों को किसी भी हाल में निराश और हताश नहीं होने देता, योंकि वह ऐसे ईश्वर पर विश्वास रखता है जो ज़मीन-आसमान के रे ख़ज़ानों का मालिक है। वह साहस, हिम्मत, हौसला और अपनी त पर क़ायम रहने की शक्ति पैदा करता है। वह जब ईश्वर की ख़ुशी लिए संसार में महान काम करने के लिए उतरता है तो उसके दिल यह विश्वास होता है कि मेरे पीछे इस ज़मीन व आसमान के बादशाह ी शक्ति है। इस विश्वास के आधार पर जो लोग तैयार होते हैं और ससे जो संगठन जन्म लेता है उसका पूरा जीवन एक ही रंग में रंगा भा होता है। ऐसा नहीं होता कि जीवन को विभिन्न भागों में बाँटकर सके कुछ भागों में ईश्वर के आदेशों का पालन करें और बाक़ी जीवन उनसे आज़ाद रखें, पूजा के स्थानों व धार्मिक जीवन के सीमित त्र में तो ईश्वरीय आदेशों का पालन करें और जीवन के दूसरे मामलों स्वयं अपनी इच्छा अथवा फ़ायदे के अनुसार काम करें या अपने दूसरे इनसानों के आदेशों के हवाले कर दें।

उपरोक्त विश्वास रखनेवाला अपने आपको और दुनिया की हर चीज़ जानवरों की तरह नहीं देखता। जब वह बुद्धिमान मानव की दृष्टि अपने आसपास नज़र डालता है तो उसे साफ़ दिखाई देता है कि

परमेश्वर की कारीगरी के जो करिश्मे साफ़ नज़र आते हैं, जैसे सूर
और चाँद के चक्कर, दिन और रात का आना-जाना और ऐसी बहुत-स
कार्रवाइयों से इस बात का सुबूत मिलता है कि इतने महान कारख़ा
का पैदा करनेवाला कोई बच्चा नहीं है, जिसने सिर्फ़ खेलने के लि
यह सब कुछ बनाया हो और फिर दिल भर जाने के बाद यूँ ही इ
घरौंदे को तोड़ डालेगा। स्पष्ट रूप से नज़र आ रहा है कि उसके ह
काम में व्यवस्था है, बुद्धिमत्ता और नियोजन है और प्रत्येक कण क
पैदाइश में एक गहरा उद्देश्य पाया जाता है। जब ऐसा है तो उस
यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि वह इनसान को बुद्धि और विवेक
ज़िम्मेदारी और उपयोग के अधिकार देने के बाद उसके जीवन काय
का हिसाब कभी नहीं लेगा और जब अक़ली तौर पर भी हर का
का अच्छा या बुरा परिणाम उपेक्षित है, तो फिर यह कैसे सम्भव
कि इनसान यूँ ही छोड़ दिया जाए।

इस चिन्तन के नतीजे में ये बातें उनके दिल की आवाज़ बन जात
हैं कि इनसान इस दुनिया में ग़ैर ज़िम्मेंदार नहीं बल्कि अपने तमा
कार्यकलापों के लिए परमेश्वर के सामने उत्तरदायी है और चूँकि दुनिय
की वर्तमान व्यवस्था हमेशा रहनेवाली नहीं है, बल्कि एक समय उस
अन्त हो जानेवाला है, इसलिए इनसान को उसके किए का बदला पा
के लिए ज़रूरी है कि परमेश्वर इस दुनिया के मिटने के बाद एक दूस
दुनिया रचे और सब ही इनसानों को एकदम दोबारा पैदा करे और जम
करके जिसने जैसा किया है, उसका पूरा-पूरा बदला दे दे।

वास्तविक मुक्ति

परन्तु इस शिक्षा और मार्गदर्शन की हैसियत केवल इतनी ही न
है कि वह इनसान को संसार के संकटों से छुटकारा देनेवाली अथव
केवल उसकी सांसारिक समस्याओं का समाधान करनेवाली है। यह शिक्ष
वास्तव में एक सच्चाई पैदा करती है और उसको सदा रहनेवाली उ
तबाही और बरबादी से बचाना चाहती है, जिससे उसको यह सच्चा

स्वीकार न करने की हालत में सामना करना ही पड़ेगा। इतिहास साक्षी है कि जब-जब मनुष्य ने इस आदेश को मानकर इसपर चलना शुरू किया तब-तब मानवता पर बहार आ गई और उसके लिए कोई ऐसी समस्या ही नहीं रही, जिसके समाधान की आवश्यकता पड़ी हो और यह संसार वास्तव में उसके लिए स्वर्ग बन गया । ये बहुत-से अनुभव इस बात का सुबूत हैं कि जिन सच्चाइयों को यह शिक्षा प्रकाश में लाती है, वे इस जगत की सबसे बड़ी और मौलिक सच्चाइयाँ हैं।

अन्त में बस इतनी बात और कहनी है कि निस्संदेह एक ऐसा दिन आकर रहेगा, जिस दिन इनसान अपने भाई, अपने बाप, अपनी पत्नी और अपनी संतान से भागेगा। उनमें से हर एक पर उस दिन ऐसा समय आ पड़ेगा कि उसे अपने सिवा किसी का होश या किसी की चिन्ता न होगी। वहाँ वे लोग भी, जिन्हें इस दुनिया में पूजा जाता था, कहेंगे कि न हमने कभी उनसे कहा था कि हमारी पूजा करो और न हमें यह ख़बर थी कि यह नादान लोग हमारी पूजा कर रहे हैं।

अब जबकि आपको यह सब बातें बताई जा रही हैं तो आप उस रोज़ यह नहीं कह सकेंगे कि हे परमेश्वर हमको यह किसी ने नहीं बताया कि तेरे साथ हमारा सम्बन्ध कैसा होना चाहिए। उस दिन जो अंजाम सामने आनेवाला है उसपर क्यों न आज ही विचार कर लें!

★ ★ ★